Sociology. B.A Part II Paper. II

Date 4/5/20

INDIAN Society and Culture

From.
Dr Arun Kumar Rendey
Deptt of Sociology
Shershah College
SASARAM

भारत मे महिलाओ की वर्तमान स्थिति, वैदिक तथा मध्यकाल की स्थिति -

प्रस्तावना — भारत मे महिलाओ की स्थिति ने पिछले कुछ सदियो मे कई बड़े बदलाओ का सामना किया है। प्राचीन काल मे पुरुषो के साथ बराबरी की स्थिति से लेकर मध्ययुगीन काल के निम्न स्तरीय जीवन और साथ ही कई सुधार की द्वारा समान अधिकारो को बढ़ावा दिए जाने तक, भारत मे महिलाओ का इतिहास काफी गतिशील रहा है। आधुनिक भारत महिलाएं राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री लोक सभा अध्यक्ष, प्रतिपक्ष की नेता जैसे शीर्ष पदो पर आसीन हुई है।

भारत मे महिलाओ की स्थिति सदैव एक समान नही रही है। इसमे युगानुरूप परिवर्तन होते रहे है उनकी स्थिति मे वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक अनेक उतार चढाव आते रहे है तथा उनके अधिकारो मे तदनरूप बदलाव भी होते रहे है। वैदिक युग मे स्त्रियो की स्थिति सुदृढ़ थी, परिवार तथा समाज मे उन्हे सम्मान प्राप्त था। उनको शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। सम्पत्ति मे उनको बराबरी का हक था। सभा व समितियों मे वे स्वतन्त्रता पूर्वक भाग लेती थी। तथापि ऋग्वेद मे कुछ ऐसे उदाहरण भी है जो महिलाओ के विरोध मे दिखाई पड़ती है। ऋग्वेद का कथन है कि स्त्रियो के साथ कोई मित्रता नही है ऋग्वेद के अन्य कथन मे स्त्रियो को दास की सेना का अस्त्र शस्त्र कहा गया है। स्पष्ट है कि वैदिक काल मे भी कहीं न कही महिलाओ को नीची दृष्टि से देखी जाती थी। फिर भी हिन्दु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे वह समान रूप से आदर और प्रतिष्ठित थी। शिक्षा, धर्म, व्यक्तित्व, और सामाजिक विकास मे उसका महान योगदान था। संस्थागत रूप से स्त्रियो की अवनति उत्तर वैदिक काल से शुरु हुई उनपर अनेक प्रकार के आरोपण कर दिया गया। उनके लिए निन्दनीय शब्दो का प्रयोग होने लगा। उनकी स्वतन्त्रता पर अनेक प्रकार के अंकुश लगाये जाने लगे। मध्यकाल मे इनकी स्थिति और भी दयनीय हो गयी। पर्दा प्रथा इस सीमा तक बढ़ गई कि स्त्रियो के लिए कठोर एकान्त नियम बना दिए गए। शिक्षण की सुविधा पूर्णरूपेण समाप्त हो गई।

वैदिक काल मे महिलाये — वैदिक एवं उत्तर वैदिक काल मे महिलाओ को गरिमामय स्थान प्राप्त था। उसे देवी, अनुगामिनी, सहचरी, माना जाता था, स्मृति काल मे भी "यत्र नार्यस्तु पूज्यते, रमन्ते तत्र देवता" कहकर उसे सम्मानित स्थान प्राप्त किया गया है, पौराणिक काल मे शक्ति का स्वरूप मानकर उसकी आराधना की जाती रही है। किन्तु 11 वी शताब्दी से 19 वी शताब्दी के बीच भारत मे महिलाओ की स्थिति दयनीय होती गई।

एक तरह से यह महिलाओं के सम्मान, विकास और ... का अंधकार युग था। मुगल साम्राज्य ... केन्द्रीय सत्ता का विलुप्त होना, विदेशी आक्रमण एवं मानव की विलासितापूर्ण प्रवृत्ति ने महिला वर्ग को उपभोग की वस्तु बना दिया था। और उसके कारण बाल विवाह, पर्दा प्रथा, अशिक्षा आदि विभिन्न सामाजिक कुरीतियाँ समाज में प्रवेश हुआ जिसने महिलाओं की स्थिति को दीन बना दिया तथा उनके निजी व सामाजिक जीवन को कलुषित कर दिया।

मध्यकाल में महिलायें — समाज में भारतीय महिलाओं की स्थिति में मध्ययुगीन काल के दौरान और अधिक गिरावट आयी जब भारत के कुछ समुदायों में सती प्रथा, बाल विवाह और विधवा पुनर्विवाह पर रोक, सामाजिक जिन्दगी का एक हिस्सा बन गई थी। भारतीय उपमहाद्वीप में मुसलमानों की जीत ने परदा प्रथा को भारतीय समाज में ला दिया। राजस्थान के राजपूतों में जौहर की प्रथा थी। भारत के कुछ हिस्सों में देवदासियों या मंदिर की महिलाओं को यौन शोषण का शिकार होना पड़ा था। बहुविवाह की प्रथा हिन्दू क्षत्रिय शासकों में व्यापक रूप से प्रचलित थी। कई मुस्लिम परिवारों में महिलाओं को जनाना क्षेत्रों तक ही सीमित रखा गया था। इन परिस्थितियों के बावजूद भी कुछ महिलाओं ने राजनीति, साहित्य शिक्षा, और धर्म के क्षेत्रों में सफलता हासिल की। रजिया सुल्तान, दिल्ली पर शासन करने वाली एकमात्र महिला सम्राज्ञी बनी। गोंड की महारानी दुर्गावती देवी ने 1564 में मुगल सम्राट अकबर के सेनापति आसफ खान से लड़कर अपनी जान गवाने से पहले सात वर्षों तक शासन किया था। चांद बीबी ने 1590 के दशक में अकबर की शक्तिशाली मुगल सेना के खिलाफ अहमदनगर की रक्षा की। जहांगीर की पत्नी नूरजहाँ ने राजसी वालिका प्रभावशाली ढंग से इस्तेमाल किया और मुगल राजगद्दी के पीछे वास्तविक शक्ति के रूप में पहचान हासिल की। शिवाजी की माँ जीजाबाई को एक योद्धा और एक प्रशासक के रूप में उनकी क्षमता के कारण क्वीन रीजेंट के रूप में पदस्थापित किया गया था। दक्षिण भारत में कई महिलाओं ने गाँवों, शहरों और जिलों पर शासन किया और सामाजिक एवं धार्मिक संस्थानों की शुरुआत की

भक्ति आंदोलन ने महिलाओं की बेहतर स्थिति को वापस हासिल करने की कोशिश की और प्रभुत्व के स्वरूपों पर सवाल उठाया। एक महिला संत-कवयित्री, मीराबाई, भक्ति आंदोलन के महत्वपूर्ण चेहरों में से एक थी।

भक्ति आंदोलन के कुछ ही समय बाद सिक्खों के पहले गुरु, गुरु नानक ने भी पुरुषों एवम् महिलाओं के बीच समानता के संदेश को प्रचारित किया। उन्होंने महिलाओं को धार्मिक संस्थानों का नेतृत्व करने सामूहिक प्रार्थना के रूप में गाये जाने वाले कीर्तन या भजन की जाने और इनकी अगुआई करने, धार्मिक प्रबंधन समितियों के सदस्य बनने युद्ध के मैदान में सेना का नेतृत्व करने विवाह में बराबरी का एक अमृत (दीक्षा) में समानता की अनुभूति देने की वकालत की। अन्य सिख गुरुओं ने भी महिलाओं के प्रति भेदभाव के खिलाफ उपदेश दिए।

मध्यकाल में विदेशियों के आगमन से स्त्रियों की स्थिति में जबर्दस्त गिरावट आ गयी। अशिक्षा और रूढ़ियाँ जकड़ती गई घर की ~~चारदी~~ चारदीवारी में कैद होती गई और नारी एक अबला, रमणी और भोग्या बनकर रह गई। आर्य समाज आदि समाज सेवी संस्थाओं ने नारी शिक्षा आदि के लिए प्रयास आरम्भ किये। उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में भारत के कुछ समाजसेवियों जैसे राजाराम मोहन राय, दयानन्द सरस्वती, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर तथा केशवचन्द्र सेन ने अत्याचारी सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठायी। इन्होंने तत्कालीन अंग्रेजी शासकों के समक्ष स्त्री पुरुष समानता, स्त्री शिक्षा, सतीप्रथा पर रोक तथा बहु विवाह पर रोक की आवाज उठायी। इसी का परिणाम था सती प्रथा निषेध अधिनियम 1829-1856 में हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम ~~1829~~ 1891 में एज आफ कन्सेन्ट बिल 1891 बहु विवाह रोकने के लिए नेटिव मैरिज एक्ट पास कराया। इन सभी कानूनों का समाज पर दूरगामी परिणाम हुआ। वर्षों के नारी स्थिति में आयी गिरावट में रोक लगी। आने वाले समय में स्त्री जागरूकता में वृद्धि हुई और नये नारी संगठनों का सूत्रपात हुआ जिनकी मुख्य मांग स्त्री शिक्षा, दहेज, बालविवाह जैसे कुरीतियों पर रोक, महिला अधिकार महिला शिक्षा, की मांग की गई

महिलाओं के पुनरोत्थान का काल ब्रिटिश काल से शु होता है ब्रिटिश शासन की अवधि में हमारे समाज की सामा व आर्थिक संरचनाओं में अनेक परिवर्तन किए गए। ब्रिटिश शासन के 200 वर्षों की अवधि में स्त्रियों के जीवन में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष अनेक सुधार आये। औद्योगिकरण, शिक्षा का विस्तार सामाजिक आंदोलन व महिला संगठनों का उदय व सामाजिक विधानों ने स्त्रियों की दशा में बड़ी सीमा तक सुधार की ठोस शुरुआत की।

- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से सरकार द्वारा उनकी आर्थिक सामाजिक, शैक्षणिक और राजनीतिक स्थिति में सुधार लाने तथा उन्हें विकास की मुख्य धारा में समाहित करने हेतु अनेक कल्याणकारी योजनाएं और विकासात्मक कार्यक्रमों का संचालन किया गया. महिलाओं के विकास की अखिल धारा से प्रवाहित करने शिक्षा की समुचित अवसर उपलब्ध कराकर उन्हें अपने अधिकारों और दायित्वों के प्रति सजग करते हुए उनकी सोच में मूलभूत परिवर्तन लाने आर्थिक गतिविधियों में उनकी अभिरुचि उत्पन्न कर उन्हें आर्थिक सामाजिक दृष्टि से आत्मनिर्भरता और स्वावलम्बन की अग्रसारित करने जैसे अहम उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पिछले कुछ दशकों में विशेष प्रयास किये गए हैं।

- उन्नीसवी सदी के मध्यकाल से लेकर इक्कीसवी सदी तक आते-2 पुनः महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ और महिलाओं ने शैक्षिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक धार्मिक प्रशासनिक, खेलकूद आदि विविध क्षेत्रों में उपलब्धियों के नए आयाम तक किये गए आज महिलाएँ आत्मनिर्भर स्वनिर्मित आत्मविश्वासी है, जिसने पुरुष प्रधान चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में भी अपनी योग्यता प्रदर्शित की है। वह केवल शिक्षिका नर्स, स्त्री रोग की डाक्टर न बनकर इंजीनियर पायलट, वैज्ञानिक, तकनीशियन, सेना, पत्रकारिता जैसे नये-क्षेत्रों में भी अपना रही है।

20 वी सदी के उत्तरार्द्ध और अब 21 सदी के प्रारम्भ में बराबरी व्यवहार वाले जोड़े बनने लगे हैं। नौकरी वाली नारी के साथ पुरुष कि मानसिकता में बदलाव आया है।

- आज की नारी राजनीति, कारोबार, कलाक्षेत्र नौकरियों में पहुंचकर नये आयाम गढ़ रही है। नारी ने अपनी एक नितान्त सम्मानजनक जगह कायम कर ली है। आंकड़े दर्शाते है कि प्रतिवर्ष कुल परीक्षार्थियों में 50 प्रतिशत महिलाएँ परीक्षा में उत्तीर्ण करती है।

आजादी के बाद लगभग 12 महिलाएँ विभिन्न राज्यों की मुख्यमंत्री बन चुकी हैं। भारत के अग्रणी सॉफ्टवेयर उद्योग में 21 प्रतिशत पेशेवर महिलाएँ हैं। फौज, राजनीति, खेल, पायलट तथा उद्यमी सभी क्षेत्रों में स्वयं को स्थापित कर पायी हैं। अगर हमें विकास करना है तो महिलाओं का उत्थान करना होगा। महिलाओं का विकास होने पर समाज का विकास स्वतः हो जाएगा।

- जवाहरलाल नेहरू द्वारा महिलाओं को उत्थान हेतु शिक्षा तथा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए जो सुधार आंदोलन प्रारम्भ हुआ उससे समाज में एक नई जागरूकता उत्पन्न हुई है। बाल विवाह, भ्रूण हत्या पर सरकार द्वारा रोक लगाने का अथक प्रयास हुआ है।

- शैक्षणिक गतिशीलता से पारिवारिक जीवन में परिवर्तन हुआ है। गाँधीजी ने कहा था कि एक की शिक्षा एक लड़के को शिक्षित करने की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है। लड़के को शिक्षित करने पर वह अकेला शिक्षित होता है किन्तु एक लड़की की शिक्षा पूरे परिवार को शिक्षित बनाता है।

- संवैधानिक अधिकारों में विभिन्न कानूनों के द्वारा महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार मिलने से उनकी स्थिति में परिवर्तन हुआ। महिलाओं को विवाह विच्छेद, परिवार की सम्पत्ति पर पुरुषों के समान अधिकार दिए गये। दहेज पर कानूनी प्रतिबन्ध लगा तथा उन व्यक्तियों के लिए कठोर दण्ड की व्यवस्था की गयी जो दहेज को लेकर महिलाओं का उत्पीड़न करते हैं। संयुक्त परिवार के विघटन होने से जैसे जैसे एकाकी परिवार की संख्या बढ़ी इनमें न केवल महिलाओं को सम्मानित स्थान मिलने लगा बल्कि लड़कियों की शिक्षा को भी एक प्रमुख आवश्यकता के रूप में देखे जाने लगा।

- महिला शिक्षा समाज का आधार है

महिला शिक्षा का स्पष्ट लाभ परिवार, समाज एवं सम्पूर्ण राष्ट्र का होता है। चूंकि महिला ही माता के रूप में बच्चे की प्रथम अध्यापक बनती है।

वस्तुतः इक्कीसवी सदी महिला सदी है। वर्ष 2001 महिला सशक्तिकरण वर्ष के रूप मे मनाया गया। इसमे महिलाओ की क्षमताओ और कौशल का विकास करके उन्हे अधिक सशक्त करके तथा समग्र समाज की महिलाओ की स्थिति और भूमिका के संबंध मे जागरूक बनाने का प्रयास किये गए।

- भारत ही नही विश्व पटल पर अपनी पहचान बनाती हुई स्त्रियो ने अपनी पुरानी मान्यताये बदली है।

महिलाओ की स्थिति मे सुधार ने देश के आर्थिक और सामाजिक सुधार के मायने भी बदल कर रख दिए गए है। दूसरे विकासशील देशो की तुलना मे हमारे देश मे महिलाओ की स्थिति काफी बेहतर है। महिलाओ की हालात पूरी तरह बदल गए है।

- वर्तमान समय मे भारत सरकार द्वारा महिलाओ के उत्थान के लिए अनेक कार्यक्रम एवं योजनाएँ का संचालन तो की जा रही है लेकिन इन योजनाओ का क्रियान्वयन निचले स्तर तक उचित ढग से नही मिल पा रहा है। यह सच है कि वर्तमान समय मे स्त्रियो की स्थिति मे काफी बदलाव आए है. लेकिन फिर भी वे अनेक स्थानो पर पुरुष प्रधान-मानसिकता से पीड़ित हो रही है।

राष्ट्रनिर्माता स्वामिविवेकानंद का यह कथन उल्लेखनीय है - किसी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर वहा की महिलाओ की स्थिति है. नारियों की ऐसी स्थिति में पहुँचा देना चाहिए जहाँ वे अपनी समस्याओ को अपने ढग से स्वय सुलझा सके। हमे नारीशक्ति के उद्धारक नही, बस उनके सेवक और सहायक बनना चाहिए। भारतीय नारियाँ संसार की अन्य किन्ही नारियो के भाँति अपनी समस्याओ को सुलझाने की क्षमता रखती है। आवश्यकता है उन्हे उपयुक्त अवसर देने की। इसी आधार पर भारत के उज्जवल भविष्य की सभावनाए सन्निहित है"

Fraau Dr Arun Kumar
Reader
Dept of Zoology
Sherghati College Sasaram
4/5/20